चार्वाक दर्शन

भारतीय विचारधारा में चार्वाक दर्शन एक प्रत्यक्षवादी, भौतिकवादी और सुखवादी विचारधारा है। यह ज्ञान-मीमांसा की दृष्टि से प्रत्यक्षवादी, तत्वमीमांसा की दृष्टि से भौतिकवादी तथा आचार-मीमांसा की दृष्टि से सुखवादी विचारधारा है।

चार्वाक दर्शन के प्रणेता या प्रवर्तक 'गुरु बृहस्पति' को माना जाता है।

चार्वाक शब्द का अर्थ - चारु वाक्य से लिया जाता है जिसका अर्थ है सुंदर वचन

चार्वाक राक्षस के द्वारा इस मत का प्रवर्तन होने के कारण भी इसे चार्वाक दर्शन कहा जाता है।

चार्वाक शब्द का उत्पत्ति चर्व धातु से हुई है जिसका अर्थ होता चबाना या भोजन करना चूंकि यह दर्शन खाने, पीने और मौज-मस्ती को ही परम पुरुषार्थ माना जाता है अतः इसे चार्वाक कहते हैं।

इस दर्शन को लोकायत भी कहते हैं क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष लोक की ही एकमात्र सत्ता स्वीकार की गई है।

चार्वाक दर्शन का महत्वपूर्ण पक्ष उसकी ज्ञानमीमांसा सिद्धान्त है। चार्वाक दर्शन के अनुसार यथार्थ ज्ञान का एक ही प्रमाणित साधन है - प्रत्यक्ष। चार्वाकों के अनुसार - 'प्रत्यक्षमेक प्रमाणम्' भारतीय दार्शनिकों की भाँति यह स्वीकार करते हैं कि ज्ञानेन्द्रियों एवं विषयों से उत्पन्न ज्ञान ही प्रत्यक्ष है, चूँकि हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं आँख, नाक, कान, जिह्वा और त्वचा। अतः इनसे क्रमशः रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श का ज्ञान होता है।

अनुमान का खण्डन

चार्वाक दर्शन का जितना विशिष्ट पक्ष इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण की स्वीकृति है उतना ही विशिष्ट पक्ष अन्य प्रमाणों विशेषतः अनुमान प्रमाण का खण्डन है।

अनुमान

अनुमान प्रमाण को सभी दार्शनिकों ने परोक्ष साधन के रूप में स्वीकार किया है। अनुमान-परवर्ती ज्ञान जो प्रत्यक्ष ज्ञान के बाद स्वीकार किया जाता है।

अनुमान शब्द दो शब्दों के योग से बना है अनु + मान। अनु का अर्थ है पश्चात और मान का अर्थ है ज्ञान इस प्रकार अनुमान का शाब्दिक अर्थ होगा पश्चात या बाद में होने वाला ज्ञान।

दूसरे शब्द में ज्ञात तथ्य के बाद उसी के आधार पर अज्ञात तथ्य के विषय में कोई ज्ञान प्राप्त करना अनुमान है।

जैसे - पर्वत में अदृश्य धुएँ का ज्ञान प्राप्त

अनुमान का प्राण व्याप्ति

अनुमान का प्राण या आधार व्याप्ति को माना जाता है अनुमान पक्ष में हेतु के द्वारा साध्य की सिद्धि का ज्ञान है। इस प्रकार अनुमान में तीन पद है

पक्ष - पर्वत

साध्य - अग्नि

हेतु - धुआँ

हेतु और साध्य के व्याप्ति सम्बन्ध के ज्ञान तथा पक्ष में हेतु के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर अनुमान प्राप्त किया जाता है।

चार्वाक के द्वारा अनुमान का खण्डन के लिए दिए गए तर्क →

→ चार्वाक दर्शन अनुमान का खण्डन करते है इसके लिए सर्वप्रथम उन्होंने अनुमान के आधार भूत सिद्धान्त व्याप्ति को अवैध सिद्ध करने का प्रयास किया है।
हेतु और साध्य का व्याप्य - व्यापक भाव ही अनुमान है धूम और अग्नि के बीच व्याप्य - व्यापक भाव एवं तत्सदृश अन्य व्याप्तियों की कल्पना निराधार एवं तर्कविरुद्ध है।
चार्वाकों का मत है कि अनुमान तभी निश्चयात्मक एवं निर्दोष हो सकता है जब व्याप्ति निर्दोष व वास्तविक हो।
यह तभी हो सकता है जब व्याप्ति का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जहाँ तक प्रत्यानुभव का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है परिणामतः सामान्य सम्बन्ध का ज्ञान नहीं हो सकता।

→ अवैध सामान्यीकरण दोष